कंचना सिंह की कविताएँ

दार्जिलिंग
rakeshofbanka@gmail.com

भारत की बेटी

आई हूँ जाने के लिए,
इस सच को बस दोहराना है,
हर नम आँखों में दिख पाऊँ,
ऐसा मुझे बन जाना है ।

आने जाने के क्रम में ,
कुछ रीत नई बनानी है ,
कुछ जख्म भर सकूँ दुनिया के ,
ऐसी नदी बन जानी है ।

बंजर भूमि की हरियाली बन ,
जग की क्षुधा मिटा सकूँ ,
बरसा की बूँदों में रमकर ,
कुछ गीत खुशी के गवा सकूँ ।

अपने लहूँ की बूँदों से ,
देश की महिमा गर लिख पाऊँ ,
इस मिट्टी का कर्ज तो थोड़ा ,
मैं भी जरूर चुका पाऊँ ।

हे प्रभु! जानती हूँ इस सच को ,
मृत्यु एक बहाना है ,
मिट्टी की काया को तो ,
बस मिट्टी में मिल जाना है ।

मन के एक कोने से प्रभुवर ,
आती आवाज यह बारम्बार है ,
नई सोच नये संकल्पों के ,
साथ मुझे फिर आना है ,
भारतमाता की बेटी बन ,
फिर से मुझे इतराना है ।

आई हूँ जाने के लिए ,
इस सच को ही दोहराना है ,
हर नम आँखों में दिख पाऊँ ,
ऐसा मुझे बन जाना है ।

सबके वश की बात नहीं

देश का ताला खोल दिया लुटेरों के लिए ,
जबान पर ताला लगा लिया वोटों के लिए,

अजी सच्चाई की राह पर चलना ,
सबके वश की बात नहीं,
आत्मा की हत्या कर जीना भी ,
सबके वश की बात नहीं ।

सौंदों के सौदागर बने बैठे हैं वो निकम्मे,
युवाओं के सपनों को बेचा कुर्सी प्रेम के लिए,

अजी अपने आँसू पीकर ,आँसू पोछना,
सबके वश की बात नहीं,
अन्नदाताओं को अन्न के लिए तड़पाना,

सबके वश की बात नहीं ।

सोशल मीडिया का दरवाजा खोल दिया ,
युवाओं की चहलकदमी के लिए,

अजी नोटों पर डाका डाल काले सफेद में
उलझाना,
सबके वश की बात नहीं ,
पेट्रोल डीजल का दाम बढ़ा,
पोस्टर पर नमस्कार मुद्रा में मुस्कुराना ,
सबके वश की बात नहीं ।

भूखों की थाली से रोटी छीना भगोड़ों के लिए,
देश बेच दिया सत्ता में बने रहने के लिए,
सच्चाई की राह पर चलना ,
सबके वश की बात नहीं ।

रंगोली

माँ का आँचल खींचकर ,
थोड़ी सी जिद्दी बनकर ,
बोली मुन्नी बड़े प्यार से -
माँ, मैं भी रंगोली बनाऊँगी ,
लछमी मैया को इसबार ,
अपने घर पकड़कर लाऊँगी ।
फिर माँ की विद्रुप हँसी से ...
उसको बहुत रोना आया ,
हट गई वो माँ के आगे से ,
कहीं आँसू ना माँ देख ले ,
आसमान की ओर ताककर,
बोल पड़ी मुन्नी बिटिया-
इसबार हमपर भी तुम,
रहम करना लछमी मैया...।

मेरी माँ ने कई दिनों से ,
पेटभर नहीं खाना खाया ,
सुबह सबेरे लोगों के घर ,
बरतन झाड़ू करती है ,
हाथों में जो दम नहीं तो ,
पूरे दिन गाली सुनती है ।
वहाँ से जो थोड़ा है पाती ,
मुझे खिला, आनंदित होकर ,
स्वयं भूखी सो जाती है ,
दया दृष्टि बहुत पाती माँ,
मददगार कोई नहीं मैया ,
इसबार हमपर भी तुम ,
रहम करना लछमी मैया ।

सुबक-सुबक कर प्रार्थना कर ,
स्वयं को थोड़ा संयत कर ,
मुन्नी ने फूल पत्ते बड़े प्रेम से जमा किया ,
अनमोल रंगोली बनाने का श्री गणेश किया ।
देख अपनी ही रंगोली वह,
बड़े जोर से खिलखिलाई ,
प्रकृति के इस अनुपम रंग को ,
कहाँ पैसे वालों ने पाई ।
तत्क्षण उसने फिर मुस्कुरा कर ,
यह अविलंब निश्चय किया ,
दूर करूँगी मैं माँ के दुख को ,
और पहले सरस्वती लाऊँगी ,
एकदिन लछमी भी आएगी ,
माँ की विद्रुप हँसी फिर
कोमलता में बदल जाएगी ।

इक्कीसवीं सदी में हम जाने लगे हैं...

रामायण आलमारी में सजने लगे हैं,
महाभारत जीवन में उतरने लगे हैं,
गीता का पाठ अब कोई पढ़ता नहीं है ,
हर कोई "गीता" अब पढ़ाने लगे हैं ,
कुरान के बोल भी दिल से उतरने लगे हैं,
बाइबिल के शब्द गुम होने लगे हैं ।
दोस्तों कहते हैं कुछ लोग-
इक्कीसवीं सदी में हम जाने लगे हैं ।

जिन रिश्तों से घर को सजाया करते थे,
पनाह लेने अब वो आश्रम जाने लगे हैं।
खून के रिश्ते हम भुलाने लगे हैं,
फेसबुक , ट्विटर पर रिश्ते बनाने लगे हैं ।
दोस्तों कहते हैं कुछ लोग-
इक्कीसवीं सदी में हम जाने लगे हैं ।

हमारे भारत की शान निराली है,

अनेकता मे एकता ही निशानी है ।
कैलाश से मंदाकिनी उतर पद्मा बनी है
सांगों से पूछो भारत में क्या रखा है ?
ब्रह्मपुत्र बनकर यहाँ क्यों बहने लगी है ?
दोस्तों कहते हैं कुछ लोग-
इक्कीसवीं सदी में हम जाने लगे हैं ।

रिश्तों की दुकानदारी

रिश्तों की दुकानदारी में आज, जो रिश्ते सजाए बैठे हैं
धड़कनों की आवाज को, वो वर्षों अनसुनी किए हैं

अस्थियों को सामग्री बना कुर्सी कमाने बैठे हैं ।

बड़ा जालिम जमाना है दोस्तों -
रिश्तों की दुकान सजा मुनाफा कमाने बैठे हैं ..

कुछ रहबर पास बैठे यह आस लगाए बैठे हैं
मरूँगा जब एकदिन गर चुनावी मौसम में
मेरी अस्थियाँ भी पार्टी के काम आयेंगी
जिन्दा नजर इन्हें आया नहीं
मेरी मौत पर ये दिमागी आँसू बहायेंगे

रिश्तों की व्यापारी का पाठ भविष्य हेतु छोड़ जायेंगे
इतिहास को इतिहास बना अपनी स्वार्थ सिद्धि कर जायेंगे ।